fnukad 1 vDVwcj] 2016 dks vxzoky lHkk }kjk Jh vxzlsu t;arh egksRlo ds volj ij vk;kftr dk;Ze esa ekuuh;k jkT;iky egksn;k dk vfHkHkk"k.k%&

सर्वप्रथम सभी को नवरात्र की हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई अर्पित करती हूँ। अग्रवाल सभा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

महाराजा अग्रसेन एक युग पुरुष, राम राज्य जैसे आदर्श राज्य के समर्थक एवं महादानी थे। लोक–कथाओं के अनुसार, वे ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने प्रजा–जनों की खुशहाली के लिए समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन किया। ‘‘परोपकार से बड़ा कोई अन्य पूण्य नहीं है’’, के विचार को उन्होंने अपने जीवन में अपनाया। वास्तिविकता में दूसरों की भलाई निःस्वार्थ भाव से करने पर ही आनन्द की प्राप्ति होती है। स्वार्थवश सामाजिक कार्य करने पर अन्ततः मन में सदैव चिंता के साथ भय बना रहेगा। इसलिए आज सभी को सच्चे हृदय से निःस्वार्थ भाव से सामाजिक कार्य करने की आवष्यकता है।

इस अवसर पर मैं कहना चाहूँगी कि किसी भी राष्ट्र व राज्य का समग्र विकास तभी हो सकता है, जब वहाँ निवास करने वाले सभी जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के लोगों का सम्यक विकास हो। प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति में ही राष्ट्र की उन्नति निहित होती है। ऐसे में अपने समुदाय के लोगों का सामाजिक तथा आर्थिक स्तर पर उन्नयन के साथ ही इस समाज के प्रबुद्ध लोगों को चाहिए कि अन्य जाति व धर्म के लोगों का भी विकास करें। समाजसेवा किसी वर्ग विशेष तक ही सीमित नहीं

होती है, इतिहास उसी को स्मरण करता है जिन्होंने इस भावना से ऊपर उठकर सभी जाति एवं धर्म के लोगों के लिए सामाजिक कार्य किया है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि इस सभा के द्वारा सामूहिक विवाह जैसे सामाजिक कार्य किये जाते हैं। यह दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगाने की दिशा में एक सफल प्रयास है। साथ ही प्याऊ निर्माण की दिशा में सक्रिय है और सावन मेला जैसे कार्यक्रम का आयोजन कर महिला उद्यमियों के सशक्तिकरण कार्य किया जा रहा है। मैं आशा करती हूँ कि आप जाति, धर्म और वर्ग विशेष से परे हटकर समाजसेवा की मिसाल कायम करें। अपने लिये तो सभी जीते हैं, जो दूसरों के लिए जीते हैं, उनकी याद सदियों एवं युगों–युगों तक बनी रहती है। हमारी भावी पीढ़ी हमारे योगदानों पर अवश्य मंथन करेगी, जैसा कि हम आज करते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी समेत सभी स्वतंत्रता सेनानी इसके उदाहरण है, जिन्होंने समाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया और इन्हीं महान कार्यों के परिणामस्वरूप हम स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में आजादी का अनुभव कर रहे हैं।

एक बार पुनः मैं सभी से सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर भाग लेने का आह्वान करती हूँ, जिससे राष्ट्र के निर्माण में सभी की सार्थक भूमिका सुनिश्चित हो सके।

जय हिन्द्! जय झारखण्ड!